

डॉ. डेविड बाउर, प्रेरक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 23, जेम्स 2:21-26

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 23, जेम्स 2:21-26 है।

अब, जेम्स धर्मग्रंथों के इतिहास पर अपील करने के लिए आगे बढ़ता है, और यह वास्तव में उस निर्णय का केंद्र बिंदु है जो वह करना चाहता है।

और, निःसंदेह, जेम्स ईश्वर को, कुछ अर्थों में, धर्मग्रंथ का लेखक मानते हैं और निःसंदेह, मुक्ति के इतिहास के संदर्भ में निश्चित रूप से प्रमुख प्रेरक मानते हैं जिसे आपने पुराने नियम में दर्ज किया है। और इसलिए, धर्मग्रंथों के इतिहास के प्रति यह अपील बिल्कुल ईश्वर के प्रति एक अपील है। यह वास्तव में सर्वोच्च तर्क है जिसे वह देने में सक्षम है।

हमारे पास श्लोक 20 से 25 में यह है। तो, हम यहां पढ़ते हैं, क्या आप दिखाना चाहते हैं, हे उथले आदमी, कि कार्यों के अलावा विश्वास बंजर है? क्या हमारा पिता इब्राहीम कर्मों से धर्मी नहीं ठहरा, जब उस ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया? आप देखते हैं कि विश्वास उसके कार्यों के साथ-साथ सक्रिय था, और विश्वास कार्यों से पूरा हुआ। और पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धर्म गिना गया, और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया।

तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं, बल्कि कर्मों से धर्मी ठहरता है। और इसी रीति से राहाब वेश्या भी जब दूतोंको अपने पास बुलाकर दूसरे मार्ग से भेजती थी, तब कर्मोंसे धर्मी न ठहरती थी। क्योंकि जैसे शरीर आत्मा बिना मरा हुआ है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।

अब, श्लोक 21 से 24 में, वह इब्राहीम के बारे में चर्चा करता है, और फिर वह शास्त्र के इतिहास से किसी ऐसे व्यक्ति को लाकर शास्त्र के इतिहास के प्रति अपनी अपील जारी रखेगा जो अब्राहम से अधिक भिन्न नहीं हो सकता है, जैसा कि हम देखेंगे, राहाब, यह दर्शाता है कि यह है यह मामला न केवल इब्राहीम के साथ था, बल्कि आम तौर पर धार्मिक इतिहास में भी ऐसा ही था। तो, वह यहां 21 से 24 में इब्राहीम से शुरू होता है, और आपके पास वास्तव में यहां एक श्रृंखला है। तो, वह एक चीज़ से दूसरी चीज़ की ओर बढ़ता है।

हमारे यहां कार्य-कारण की पुनरावृत्ति होती है। वह औचित्य से आरंभ करता है। हे छिछोरे आदमी, क्या तुम यह दिखाना चाहते हो कि कर्मों के अतिरिक्त विश्वास बंजर है? क्या हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाकर कर्मों से धर्मी नहीं ठहराया था? अब वह इस वार्ताकार को, जो यहां वैकल्पिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, एक उथला आदमी, वास्तव में एक खाली, व्यर्थ व्यक्ति के रूप में संबोधित करता है।

यह वास्तव में काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि जेम्स यहां सुझाव दे रहे हैं कि यह धार्मिक समस्या, जैसा कि मैं कहता हूं, यह धार्मिक दृढ़ विश्वास है कि कोई व्यक्ति विश्वास और कार्यों को अलग कर सकता है, जो वैध है, एक प्रकार का विश्वास रखने के लिए वैध है जो कार्यों में खुद को व्यक्त नहीं करता है, वास्तव में यह केवल एक धार्मिक समस्या नहीं है, यह एक नैतिक समस्या है। कहने का तात्पर्य यह है कि इसका वास्तव में व्यक्ति के चरित्र से लेना-देना है। यह एक प्रकार के खालीपन, खाली होने के अर्थ में एक प्रकार के घमंड, स्वयं व्यक्ति की गहराई के एक प्रकार के भ्रष्टाचार से उत्पन्न होता है।

दूसरे शब्दों में, एक व्यक्तिगत समस्या है जो किसी व्यक्ति को इस दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित करती है: तुम उथले आदमी हो। वह सुझाव दे रहे हैं कि इसके पीछे व्यक्ति के हृदय का नैतिक भ्रष्टाचार, या कम से कम व्यक्ति के हृदय की नैतिक नीरसता बहुत अच्छी तरह से छिपी हो सकती है। अब वह आगे कहते हैं, वह यहां दावा करते हैं कि कर्मों के अलावा विश्वास बंजर है।

यहाँ शब्द आर्गोस [2:20] है। अब, स्पष्ट रूप से, सतह पर, इस व्यवसाय के बंजर होने का मतलब है कि, निस्संदेह, यह फल नहीं देता है। यह फालतू है।

यह निष्क्रिय है. यह निष्क्रिय है. यह वह नहीं करता जो ईश्वर के साथ सही स्थिति, सही संबंध के लिए किया जाना आवश्यक है।

लेकिन मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह पुराने नियम में इब्राहीम और सारा की कहानी में बंजरता के महत्व के कारण बंजरता की इस धारणा का उपयोग कर रहा है, और वास्तव में इसका सुझाव दे रहा है, और वास्तव में उस स्मरण को दिल से निकाल रहा है वाचा का, ईश्वर और इब्राहीम और इब्राहीम के वंशजों के बीच वाचा का संबंध फलने-फूलने का वादा था, वंशजों का वादा था, कई वंशज। तो, वास्तव में पुराने नियम में बंजरता बिना किसी अनुबंध के रिश्ते के लिए, अनुबंध के रिश्ते से बाहर होने के लिए, भगवान के साथ अनुबंध के रिश्ते का आनंद नहीं लेने के लिए एक प्रकार का रूपक था, जबकि फल का अनुभव करना संकेत था, भगवान के साथ अनुबंध के रिश्ते की अभिव्यक्ति थी। कुछ मायनों में, यह परमेश्वर के साथ अनुबंधित संबंध के उस बिंदु पर एक पदार्थ था।

इसलिए, वह यहां संकेत दे रहे हैं कि ईश्वर के साथ संबंध की पूरी धारणा, ईश्वर के साथ अनुबंधित संबंध, ईश्वर में विश्वास की प्रकृति के इस प्रश्न से जुड़ी हुई है। और, निःसंदेह, इब्राहीम कथा में विश्वास भी, जैसा कि वह आगे इंगित करेगा, वाचा के केंद्र में खड़ा है। तो, एक ओर विश्वास और फलदायीता के बीच, और दूसरी ओर विश्वास और वाचा के बीच एक संबंध है, जिसमें विश्वास और फलदायीता शामिल है, और कोई वाचा संबंध नहीं है, जिसमें विश्वास की कमी और फलदायीता की कमी शामिल है।

लेकिन इब्राहीम का जिस प्रकार का विश्वास था, वह निस्संदेह फलदायी था। वास्तव में इसका परिणाम कुछ हुआ। इसने बंजरता वगैरह पर काबू पा लिया।

अब, यहाँ, निस्संदेह, श्लोक 21 में, पॉल औचित्य की धारणा प्रस्तुत करता है। क्या हमारा पिता इब्राहीम कर्मों से धर्मी नहीं ठहरा, जब उस ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया? फिर, वह इसे एक अलंकारिक प्रश्न के रूप में बताता है, जो इंगित करता है कि वे उत्तर जानते हैं, या कम से कम उन्हें उत्तर जानना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि यह कहने का एक तरीका है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है, है ना? धर्मग्रंथों के निष्पक्ष और निष्पक्ष अध्ययन के आधार पर, हमारे पिता इब्राहीम को कर्मों द्वारा उचित ठहराया गया था जब उन्होंने अपने बेटे इसहाक को वेदी पर चढ़ाया था।

यह कोई गुप्त रहस्य नहीं है। यह शास्त्रों में प्रकट है। अब, मुझे लगता है, औचित्य बिल्कुल स्पष्ट रूप से एक पॉलीन शब्द है।

कुछ विद्वान हैं, जैसे कि ल्यूक टिमोथी जॉनसन, जिन्होंने जेम्स पर एक बेहतरीन टिप्पणी लिखी है, जो सबसे अच्छी टिप्पणियों में से एक है, जो इससे असहमत हैं और सुझाव देते हैं कि जेम्स इस तथ्य के संदर्भ के बिना औचित्य का उपयोग कर रहे हैं। यह एक ऐसा शब्द था जिसका प्रयोग पॉल द्वारा किया गया था। लेकिन मेरे निर्णय में, यह वास्तव में कठिन है, जब जेम्स औचित्य के बारे में बात करता है जैसा कि वह यहां करता है, तो यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि वह कुछ हद तक पॉल के साथ बातचीत में नहीं है। पॉल द्वारा इस शब्द का प्रयोग, जेम्स के अलावा, वैसे, केवल पॉल ही औचित्य के अर्थ में करता है, नए नियम में, मोक्ष और ईश्वर के साथ सही संबंध के अर्थ में औचित्य भाषा का उपयोग करता है।

केवल पॉल ही ऐसा करता है। यह शब्द पॉलीन पत्रों के बाहर केवल एक मार्ग में पाया जाता है, और वह अधिनियमों के 13वें अध्याय में है, जहां ल्यूक पिसिडियन एंटीओक में आराधनालय के सामने पॉल के उपदेश की रिपोर्ट कर रहा है। लेकिन वहाँ फिर से, ल्यूक, जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक पात्र के रूप में पॉल के मुँह से आता है।

तो, मुझे लगता है, यह एक पॉलीन शब्द है। मुझे लगता है कि इससे दूर जाना बहुत मुश्किल है। लेकिन जेम्स इसे पॉल की तुलना में कुछ अलग अर्थ में उपयोग करता है, या कम से कम वह करता है; शायद इसे रखने का एक बेहतर तरीका यह है कि वह पॉल की तुलना में इसमें कुछ अलग करे।

कॉन्ट्रा पॉल, पॉल के विरुद्ध, इब्राहीम का औचित्य ईश्वर के वादे में इब्राहीम के विश्वास के बिंदु पर नहीं पाया जाता है, जिसे खतना में शारीरिक अभिव्यक्ति मिली, जो उत्पत्ति 15.6 थी। पॉल के अनुसार, और यह पॉल इस बिंदु पर बहुत सुसंगत है, पॉल के अनुसार, इब्राहीम को उत्पत्ति 15.6 में उचित ठहराया गया था। यही वह बिंदु है जिस पर इब्राहीम ने औचित्य का अनुभव किया। और आइए हम खुद को याद दिलाएं कि हमारे पास यहां क्या है। बेशक, उत्पत्ति 15:6 में, जेम्स वास्तव में इस मार्ग को भी उद्धृत करेगा।

और फिर, यह एक और सुझाव है कि यहां जेम्स के मन में पॉल हो सकता है। और इब्राहीम, वा अब्राम ने यहोवा की प्रतीति की, और उस ने उसके लिये इसे धर्म समझा। उदाहरण के लिए, पॉल ने इसे रोमियों अध्याय 4, पद 3 में उठाया है, जो अध्याय 4 के पद 2 से शुरू होता है। क्योंकि यदि

इब्राहीम कार्यों से न्यायसंगत था, तो उसके पास घमंड करने के लिए कुछ है, लेकिन भगवान के सामने नहीं।

धर्मग्रंथ क्या कहता है? इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। फिर वह यह कहने के लिए आगे बढ़ता है कि पद 10 में पॉल क्या करता है। फिर यह उसके लिए कैसे गिना गया? क्या उसका खतना होने से पहले या बाद में हुआ था? यह खतना होने के बाद नहीं बल्कि उससे पहले हुआ था।

अब, इब्राहीम का खतना अध्याय 15 में किया गया था। और इसलिए, पॉल यहाँ बहुत स्पष्ट कर रहा है कि इब्राहीम को 15.6 पर उसके खतने से पहले, अध्याय 15 की शुरुआत में विश्वास द्वारा उचित ठहराया गया था। और आपके पास भी वैसा ही तर्क है जैसा पॉल गैलाटियन्स में भी देता है। इसलिये खतने से पहिले उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

असल में, यह खुद को याद दिलाने में सहायक हो सकता है कि पॉल दूसरी जगह क्या कहता है जहां वह वास्तव में औचित्य पर चर्चा करता है। और वह गलातियों के अध्याय 3, श्लोक 6 से 9 में होगा, मेरा मतलब है, इब्राहीम का औचित्य। इस प्रकार इब्राहीम, हम गलातियों 3:6 में पढ़ते हैं कि इब्राहीम परमेश्वर पर विश्वास करता था, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

आप देखते हैं कि यह विश्वास के लोग हैं जो इब्राहीम के पुत्र हैं। और धर्मग्रन्थ ने, यह देखकर कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराएगा, पहिले ही से इब्राहीम को सुसमाचार सुनाया, और कहा, तुझ में सारी जातियां धन्य होंगी। तो फिर, जो विश्वास के लोग हैं वे इब्राहीम के साथ धन्य हैं, जिनके पास विश्वास था।

मैं यहां केवल संयोगवश उल्लेख कर सकता हूं कि यद्यपि जब ईसाई सामान्य रूप से औचित्य के बारे में सोचते हैं, तो वे निश्चित रूप से पॉल के बारे में सोचते हैं। और जब वे पॉल के बारे में सोचते हैं, तो वे अक्सर औचित्य के बारे में सोचते हैं, खासकर प्रोटेस्टेंट ईसाइयों के बारे में। इसलिए, कई प्रोटेस्टेंट ईसाई, विशेष रूप से लूथर की पंक्ति में, मानते हैं कि पॉल की सोच के केंद्र में पॉल के सुसमाचार का औचित्य है।

वास्तव में, और कोई भी उस बात को कह सकता है, मुझे लगता है, लेकिन वास्तव में, पॉल अपने दो पत्रों में, रोमनों और गलातियों में, औचित्य भाषा का उपयोग करता है। और इसलिए, इस शब्द की उपस्थिति के संदर्भ में एक प्रश्न है कि यह कितना केंद्रीय था। अब, लूथरन परंपरा के लोग और यहां तक कि सीके बैरेट जैसे लोग, जो मेथोडिस्ट थे, तर्क देंगे, और मुझे लगता है कि इसमें कुछ वैधता है, कि औचित्य का विचार पॉल में भी पाया जाता है जहां आपके पास यह शब्द नहीं है।

इसलिए, विचार प्राप्त करने के लिए आपके पास शब्द का होना आवश्यक नहीं है। और यह उचित है। ये उचित है।

लेकिन किसी भी कीमत पर, हमें इसे कुछ परिप्रेक्ष्य में रखने की जरूरत है। लेकिन स्पष्ट रूप से, जेम्स का मानना है, ठीक है, मेरे मन में स्पष्ट है, कि जेम्स औचित्य के मुद्दे को वास्तव में पॉल के

लिए काफी महत्वपूर्ण मानता है और कम से कम कुछ लोगों के खिलाफ बहस कर रहा है, जिन्होंने, मेरे दिमाग में, विश्वास द्वारा औचित्य की पॉल की धारणा को गलत समझा। यह। और जेम्स, जैसा कि मैं कहता हूँ, विश्वास द्वारा औचित्य की पॉल की धारणा की गलत व्याख्या के खिलाफ बहस कर रहा है।

लेकिन किसी भी दर पर, पौलुस की औचित्य के बारे में समझ, जैसा कि इब्राहीम से संबंधित है, वह यह है कि उसे खतने से पहले उत्पत्ति 15:6 में या किसी भी चीज़ से पहले, उत्पत्ति 15:6 में इसके बाद आने वाली किसी भी चीज़ में उचित ठहराया गया था। हालाँकि, जेम्स के लिए, इब्राहीम को उत्पत्ति 15 में धर्मी नहीं ठहराया गया था, यानी उसे धर्मी घोषित किया गया था, लेकिन उत्पत्ति 22 में, इसहाक का बंधन, उत्पत्ति 22 में अकेदा मार्ग, जब इब्राहीम ने इसहाक की पेशकश की थी। इसीलिए वह यहाँ कहता है, क्या हमारे पिता इब्राहीम ने इसहाक को वेदी पर चढ़ाकर कर्मों से धर्मी नहीं ठहराया था? अब, जेम्स के लिए इब्राहीम के विश्वास की अभिव्यक्ति खतना नहीं थी, जैसा कि पॉल इसे लेता है। मुझे लगता है कि आपकी यहां थोड़ी असहमति है।

यह आवश्यक रूप से एक विरोधाभास नहीं है, लेकिन वैसे भी, जेम्स बहस नहीं करता है, कम से कम हमें पॉल की तरह कहना होगा। जेम्स के लिए इब्राहीम के विश्वास की अभिव्यक्ति खतना नहीं थी जैसा कि पॉल के लिए था, बल्कि उत्पत्ति 22:12 में उसके इकलौते बेटे इसहाक की भेंट थी। परमेश्वर अपने स्वर्गदूत, प्रभु के दूत के माध्यम से घोषणा करता है, परमेश्वर उत्पत्ति 22:12 में घोषणा करता है, इब्राहीम आज्ञाकारी या धर्मी है। जहां तक जेम्स का सवाल है, उत्पत्ति 15:6 की घोषणा, उत्पत्ति 22 में इब्राहीम के विश्वास की इस आज्ञाकारी अभिव्यक्ति की ओर इशारा करती है और उसका अनुमान लगाती है।

वास्तव में, हम यहाँ श्लोक 23 में देखने जा रहे हैं कि, मेरा मतलब है, जेम्स 2:23 में, जेम्स उत्पत्ति 22 को उत्पत्ति 15 की पूर्ति के रूप में देखता है। और धर्मग्रंथ पूरा हुआ, जो कहता है, इब्राहीम ने ईश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धर्म गिना गया। वहां मोरिया, उत्पत्ति 22 में, इब्राहीम को इस कार्य के आधार पर दिखाया गया और धर्मी घोषित किया गया, जैसा कि जेम्स इसे कहते हैं।

इब्राहीम को परमेश्वर ने धर्मी घोषित किया था क्योंकि वह वास्तव में धर्मी था। उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी। स्मरण करो कि यहोवा के दूत ने सचमुच परमेश्वर के वचन बोलते हुए उत्पत्ति 22:18 में इब्राहीम से क्या कहा था, कि तू ने मेरी बात मानी है।

और इब्राहीम ने उस विश्वास के द्वारा जो कार्य में प्रगट हुआ, अपनी वास्तविक धार्मिकता प्रगट की। तो, यानी, वह औचित्य के संबंध में यही दावा करता है। अब वह आगे बढ़ता है और औचित्य से संगति की ओर बढ़ता है।

यह श्लोक 22 में पाया जाता है। निस्संदेह, वह जो लिखता है उससे यह एक निष्कर्ष है। तो, वैसे, यह तार्किक कार्य-कारण का एक अच्छा उदाहरण है।

वापस जाता है, एक बयान देता है, फिर उससे एक निष्कर्ष निकालता है। तुम देखते हो कि विश्वास उसके कार्यों के साथ सक्रिय था, और विश्वास उसके कार्यों से पूरा हुआ। और संयोग से, वह शब्द पूर्ण, पूर्ण, जिसका अनुवाद पूर्ण हुआ है, टेलो से है, इसे पूर्णता में लाया गया था, उसके कार्यों द्वारा पूर्ण किया गया था।

अब, इस बिंदु पर, जेम्स को एहसास हुआ कि उसे गलत समझा जा सकता है। वैसे हमें संगति और पूर्णता या पूर्णता कहना चाहिए। इस बिंदु पर, श्लोक 22 में, जेम्स को एहसास होता है कि उसे गलत समझा जा सकता है।

कार्यों पर उनके जोर देने से यह निष्कर्ष निकल सकता है कि वह आस्था की भूमिका को कमतर आंकते हैं, आस्था महत्वपूर्ण नहीं है। वह जो कहता है, कहता है, पद 22, पद 21 में उसने जो दावा किया है, उसके आधार पर यह विशेष रूप से सच है, क्या हमारा पिता इब्राहीम कर्मों से न्यायसंगत नहीं था? जेम्स को एहसास है कि उसे गलत समझा जा सकता है, कि कार्यों पर उसका जोर इस निष्कर्ष पर पहुंच सकता है कि वह विश्वास की भूमिका को कम कर रहा है, विश्वास महत्वपूर्ण नहीं है, और केवल एक चीज जो मायने रखती है वह काम है। फिर, श्लोक 22 में, जेम्स सीधे रिकॉर्ड स्थापित करता है।

आस्था सक्रिय थी, वस्तुतः, साथ मिलकर काम करती थी। वास्तव में, आपके पास सनर्ज शब्द है, जो सूर्य है, उपसर्ग है, एर्ज के साथ, जो एर्गन या काम का एक क्रिया रूप है, साथ में काम किया है। फेथ सक्रिय था, उसने अब्राहम के साथ मिलकर काम किया और उसके कार्यों में सहायता की।

दूसरे शब्दों में, इब्राहीम के कार्य विश्वास के बिना असंभव होते। दूसरी ओर, पूर्ण कार्य - टेलीओ शब्द पर फिर से ध्यान दें, पूर्णता की ओर ले आएं - कार्य पूर्ण या पूर्ण विश्वास। अर्थात्, विश्वास को वह करने के अर्थ में पूर्ण या पूर्ण विश्वास काम करता है जो विश्वास को पहले स्थान पर करना था, किसी को ईश्वर के सामने धर्मी घोषित किए जाने के स्थान पर लाना क्योंकि वह वास्तव में धर्मी है।

जैसा कि पीटर डेविड्स कहते हैं, संयोगवश, जेम्स पर यह एक और बहुत अच्छी टिप्पणी है। जैसा कि पीटर डेविड्स कहते हैं, विश्वास कार्यों में सहायता करता है, पूर्ण विश्वास कार्यों में सहायता करता है। मैं यहां इस बिंदु पर केवल यह उल्लेख कर सकता हूं कि यह गंभीर प्रश्न उठाता है। जेम्स यहाँ जो कहता है वह धर्मशास्त्रियों द्वारा प्रदत्त धार्मिकता और आरोपित धार्मिकता के बीच अनुचित विभाजन के बारे में गंभीर प्रश्न उठाता है।

बेशक, औचित्य की पूरी अवधारणा धार्मिकता से संबंधित है। औचित्य, औचित्य शब्द डिकाइओस्यून है, जो डिकाइओस से है, जो धर्मी है। अतः औचित्य का अर्थ है धर्मी बनाना या घोषित करना।

दूसरे शब्दों में, औचित्य का संबंध धार्मिकता से है। और इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूं, मुझे लगता है कि जेम्स का तर्क आरोपित और प्रदत्त धार्मिकता के बीच गलत प्रकार के अंतर को आकर्षित करने के बारे में गंभीर प्रश्न उठाता है। धर्मशास्त्रीय शब्दजाल के अनुसार, आरोपित धार्मिकता ईश्वर के सामने दोषमुक्ति है।

यह ईश्वर की घोषणा है कि यद्यपि मैं पापी हूँ, फिर भी मुझे क्षमा कर दिया गया है। यह आरोपित धार्मिकता है, जैसा कि इसे आमतौर पर कहा जाता है, प्रदान की गई धार्मिकता के विपरीत वास्तव में नैतिक परिवर्तन शामिल है ताकि मैं वास्तव में ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने के लिए ईश्वर द्वारा सक्षम, सक्षम हो जाऊँ, आज्ञाकारिता का जीवन, उस अर्थ में धार्मिकता का जीवन। लेकिन यहाँ जेम्स के तर्क से पता चलता है कि ईश्वर की घोषणा, ईश्वर की यह घोषणा कि कोई व्यक्ति धर्मी है या न्यायसंगत है, उसमें व्यक्ति में वास्तविक धार्मिकता की वास्तविकता भी शामिल होनी चाहिए।

जैसा कि मैं कहता हूँ, ईश्वर द्वारा यह घोषणा कि एक व्यक्ति न्यायसंगत है, यह उसके लिए विश्वास माना जाता था, कि ईश्वर द्वारा यह घोषणा कि एक व्यक्ति न्यायसंगत है, वास्तविक नैतिक सशक्तिकरण और वास्तविक धार्मिकता के साथ होगी ताकि आप अंततः घोषित को अलग न कर सकें। धार्मिकता और वास्तविक धार्मिकता. खैर, किसी भी दर पर, वह आगे बढ़ता है और श्लोक 23ए में संगत से पूर्णता और पूर्णता से पूर्णता तक का निष्कर्ष निकालता है। और धर्मग्रन्थ पूरा हुआ, जो कहता है, कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।

निस्संदेह, यह उत्पत्ति 15:6 है। दूसरे शब्दों में, उत्पत्ति 15:6 में इब्राहीम के विश्वास को धार्मिकता के रूप में मानना परमेश्वर की मान्यता पर आधारित था कि इब्राहीम का विश्वास सच्चा विश्वास था, उस प्रकार का विश्वास जो कार्यों में जारी किया गया था, श्लोक 22। परमेश्वर ने उत्पत्ति 15.6 में देखा कि इब्राहीम का विश्वास था वैध था, सच्चा विश्वास था, एक प्रकार का विश्वास था जो काम करता था, जो स्वयं को कार्यों में व्यक्त करता था। और इब्राहीम के विश्वास के चरित्र के बारे में परमेश्वर की ओर से निर्णय पूरा हुआ, साकार हुआ, और उत्पत्ति 22 में इब्राहीम ने वास्तव में जो किया उससे इसकी पुष्टि की गई।

अब्राहम के विश्वास का वह आकलन सटीक साबित हुआ जब अब्राहम ने उत्पत्ति 22 में इसहाक की बलि चढ़ा दी। इस प्रकार, उत्पत्ति 15:6 की पूर्ति हुई, जिसने अब्राहम के विश्वास को एक धार्मिक विश्वास घोषित किया। अब, यह कार्य-कारण के माध्यम से आगे बढ़ता है; आप देखिए, आपके यहां एक श्रृंखला है, जो एक चीज से दूसरी चीज की ओर ले जाती है।

यह इसके अनुसार आगे बढ़ता है, और आपके पास वास्तव में, एक अर्थ में, यहां अब्राहम की कहानी का एक धार्मिक पुनर्कथन है क्योंकि यह उसके विश्वास से संबंधित है। इससे इब्राहीम की कहानी की इस पुनर्कथन का चरमोत्कर्ष हो सकता है, और श्लोक 23बी में पाया जाता है, और उसे ईश्वर का मित्र कहा गया था। उन्हें ईश्वर का मित्र कहा जाता था।

अब, दो अनुच्छेद हैं, उत्पत्ति में नहीं, पुराने नियम में, जहाँ इब्राहीम को परमेश्वर का मित्र कहा गया है। पहला 2 इतिहास, अध्याय 20, श्लोक 7 में पाया जाता है। 2 इतिहास, अध्याय 20, श्लोक 7. हे हमारे परमेश्वर, क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के साम्हने से निकाल कर सदा के लिये अपने वंशजों को नहीं दे दिया? इब्राहीम का तुम्हारा मित्र? लेकिन यशायाह 41:8 में भी। यशायाह 41:8. परन्तु हे मेरे दास इस्राएल, हे मेरे चुने हुए याकूब, हे मेरे

मित्र इब्राहीम की सन्तान। मुझे लगता है कि उसके पास है; जेम्स के पास विशेष रूप से यह मार्ग, यशायाह 41:8, ध्यान में है क्योंकि यहाँ ईश्वर स्वयं इब्राहीम को अपना मित्र कहता है।

इब्राहीम मेरे दोस्त। इसलिए, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट रूप से प्रगति का चरम बिंदु है। विश्वास का अंतिम कार्य, जो कार्यों में जारी होता है, ईश्वर के साथ व्यक्तिगत मेल-मिलाप है।

इब्राहीम के विश्वास के आधार पर, जो कार्यों में जारी हुआ, इस प्रकार का रिश्ता हासिल किया गया। व्यक्तिगत संबंधों की माँगों के लिए वास्तविक धार्मिकता की आवश्यकता होती है। ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचना अकल्पनीय है जो ईश्वर के प्रति अवज्ञा या विद्रोह का जीवन जी रहा है, या ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति उदासीनता का जीवन जी रहा है, ईश्वर का मित्र होने के नाते, ईश्वर के साथ उसका कोई भी रिश्ता है।

व्यक्तिगत संबंधों की माँगों के लिए ऐसे दावे के विरुद्ध वास्तविक धार्मिकता की आवश्यकता होती है जो ईश्वर के कार्य नहीं करता है, बल्कि वास्तव में, ऐसे कार्य करता है जो ईश्वर की इच्छा और उद्देश्य के विपरीत हैं। याद रखें, हमने पहले देखा था कि 2:9 में, कार्य अपरिहार्य हैं। यदि आप पक्षपात दिखाते हैं, तो आप पाप करते हैं और आपके कार्य पाप के कानून द्वारा दोषी ठहराए जाते हैं।

यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हो। आप कार्यों का निर्माण करने जा रहे हैं। प्रश्न केवल यह है कि ये धर्म के कार्य हैं या अधर्म के।

विश्वास का दावा जो ईश्वर के कार्य नहीं करता है, लेकिन वास्तव में ऐसे कार्य करता है जो ईश्वर की इच्छा के विपरीत हैं, पाप करता है, और ईश्वर के उद्देश्य के विपरीत है, जो अपने स्वयं के कार्य के विपरीत है, निश्चित रूप से, एक विरोधाभास है ईश्वर के साथ वास्तविक संबंध जैसा कुछ भी होने की पूरी संभावना। बेशक, दोस्ती में आपसी अंतरंगता और रिश्ते की शर्तों को पूरा करना, इस प्रकार प्राप्त रिश्ते की अंतरंगता का जश्न मनाना शामिल है। बाद में, जेम्स 4.4 में कहेगा, क्या तुम नहीं जानते कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से शत्रुता है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र बनना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का शत्रु बनाता है।

अब, यह श्लोक 6 में सामान्य निष्कर्ष की ओर ले जाता है। फिर, यह तार्किक कारण है। मैं कहता हूँ कि यहां संख्या 6 है। यह सामान्य निष्कर्ष वास्तव में श्लोक 24 में पाया जाता है।

तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं, बल्कि कर्मों से धर्मी ठहरता है। अब, सतही तौर पर, यह पॉल के विपरीत प्रतीत होता है। वास्तव में, रोमियों 4 के जिस अंश को हम पढ़ते हैं, उसमें यदि इब्राहीम को कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता, तो वह भी धर्मी ठहराया जाता।

यदि इब्राहीम कर्मों से न्यायसंगत होता, तो उसके पास घमंड करने के लिए कुछ होता, लेकिन परमेश्वर के सामने नहीं। इसलिए, सतही तौर पर, यह पॉल का खंडन करता प्रतीत होता है। लेकिन मेरे दिमाग में, यह वास्तव में गलत समझे गए पॉल का खंडन करता है।

अब, मुझे नहीं पता कि क्या जेम्स को विश्वास था कि वह पॉल के खिलाफ बहस कर रहा था, जबकि वास्तव में वह नहीं था, क्योंकि उसने पॉल को गलत समझा था, या क्या वह अपने हलकों में उन लोगों के खिलाफ बहस कर रहा था जिन्होंने पॉल को गलत समझा था। मुझे संदेह है कि यह बाद वाली बात है। लेकिन किसी भी कीमत पर, यह वास्तव में एक ही चीज़ है।

मुझे नहीं लगता कि आपको यहां पॉल से कोई विरोधाभास है। जेम्स जिन कार्यों के बारे में बात करता है, वे उस कानून के कार्य नहीं हैं जिसके बारे में पॉल बात करता है, जो एक सामान्य संदर्भ है जब पॉल कार्यों के बारे में बात करता है और हमेशा एक संदर्भ होता है जब पॉल कार्यों द्वारा उचित ठहराए जाने की असंभवता के बारे में बोलता है। जब पॉल कार्यों का उपयोग करता है, तो वह व्यवस्था के कार्यों के बारे में बात कर रहा होता है।

जेम्स का तात्पर्य है कि किसी को विश्वास के द्वारा बचाया जाना चाहिए। यह वास्तव में श्लोक 24 में निहित है। आप देखते हैं कि एक व्यक्ति कर्मों से न्यायसंगत होता है, न कि केवल विश्वास से।

जब वह कहता है कि केवल विश्वास से नहीं, तो जेम्स का तात्पर्य है कि किसी को विश्वास से बचाया जाना चाहिए, बल्कि एक प्रकार के विश्वास से जो कार्यों में जारी होता है। यह कार्यों के आधार पर है, अर्थात्, ऐसे कार्य जो विश्वास से उत्पन्न होते हैं और उनकी नींव और सक्रिय एजेंट के रूप में विश्वास होना चाहिए। इस प्रकार के कार्यों के आधार पर ही परमेश्वर अंतिम न्याय के समय किसी को धर्मी घोषित करता है।

पापियों के लिए कोई फोरेंसिक औचित्य नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह एक प्रकार की दैवीय कल्पना का मामला है, जबकि ईश्वर हमें पापियों के रूप में देखता है, हमें पापियों के रूप में देखता है, लेकिन इसके बजाय मसीह को देखता है। पापियों का कोई फोरेंसिक औचित्य नहीं है।

पाप की क्षमा है। उस अर्थ में फोरेंसिक औचित्य है, लेकिन भगवान के सामने एक प्रकार का औचित्य नहीं है जिसमें आज्ञाकारिता के बिना क्षमा शामिल है। इस अर्थ में पापियों के लिए कोई फोरेंसिक औचित्य नहीं है।

परमेश्वर उन्हें धर्मी घोषित करता है, उन लोगों को न्यायसंगत ठहराता है जो वास्तव में धर्मी हैं, अर्थात् जो उसे प्रसन्न करते हैं। यह वास्तव में ग्रीक ओल्ड टेस्टामेंट में सेप्टुआजेंट में डिकाइओ या उचित ठहराने का सामान्य अर्थ है, जो वास्तविक धार्मिकता के कारण भगवान को प्रसन्न करता है। सेप्टुआजेंट में डिकाइओ का अर्थ है धर्मी बनाना या घोषित करना, अर्थात् ईश्वर को स्वीकार्य होना, धर्मी बनाना या घोषित करना और इसलिए ईश्वर को स्वीकार्य होना।

यह निर्णय का आधार है, लेकिन ऐसे कार्य विश्वास के बिना असंभव हैं जो उनके पीछे खड़ा है और उनमें सक्रिय है। इससे पॉल को कोई झगड़ा नहीं होगा। उदाहरण के लिए, ध्यान दें, पॉल रोमियों 2:6 से 11 में क्या कहता है, क्योंकि वह प्रतिपादन करेगा, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्यों के अनुसार प्रतिफल देगा।

जो लोग धैर्य और भलाई के द्वारा महिमा, सम्मान और अमरता की खोज करते हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। परन्तु जो झूठ बोलते हैं, और सत्य को नहीं मानते, परन्तु दुष्टता को मानते हैं, उन पर क्रोध और जलजलाहट भड़केगी। हर एक बुरे काम करने वाले मनुष्य के लिये क्लेश और संकट होगा, पहिले यहूदी और यूनानी भी, और जो कोई भलाई करता है, उसके लिये महिमा, और आदर और शान्ति होगी, पहिले यहूदी और फिर यूनानी, क्योंकि परमेश्वर ने किसी का पक्षपात न करना चाहा।

अब, पॉल के संबंध में यहां कुछ कहने के लिए, सबसे पहले, रिकॉर्ड को सीधे सेट करने के लिए, जब जेम्स यहां श्लोक 24 में अपने निष्कर्ष में कहते हैं, तो आप देखते हैं कि एक व्यक्ति कर्मों से न्यायसंगत होता है, न कि केवल विश्वास से। स्पष्ट होने के लिए, पॉल कहीं भी अकेले विश्वास द्वारा औचित्य के बारे में बात नहीं करता है। रोमनों में कुछ अंशों के कुछ अनुवाद हैं जहां अकेले जोड़ा गया है, लेकिन वह वास्तव में मूल ग्रीक में नहीं पाया जाता है।

वह वास्तव में लूथर द्वारा जोड़ा गया था। यह लूथर ही था, जिसने अपने जर्मन अनुवाद में, विशेष रूप से रोमियों 3:28 में, एलीन, अकेले विश्वास को जोड़ा। परन्तु पौलुस कहीं नहीं कहता कि कोई व्यक्ति केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराया जा सकता है।

साथ ही, हमें यह स्पष्ट होने की आवश्यकता है कि जब पॉल कार्यों का उपयोग नकारात्मक तरीके से करता है, उचित ठहराए जाने की बात करता है या कार्यों या इस तरह से उचित ठहराए जाने का प्रयास करता है, जो काम नहीं करता है, तो यह पॉल के संबंध में प्रभावी नहीं है। जब पॉल कार्यों का नकारात्मक उपयोग करता है, तो पॉल कार्यों के बारे में उतनी बात नहीं कर रहा है जितनी कि दृष्टिकोण के बारे में। कार्यों द्वारा उचित ठहराए जाने के बारे में यह धारणा या कार्यों द्वारा उचित ठहराए जाने के प्रयास में व्यक्ति की ओर से एक रवैया शामिल होता है। पॉल व्यक्ति की ओर से धार्मिकता के बारे में बात नहीं कर रहा है, अर्थात्, ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के जीवन के बारे में।

जब पॉल कार्यों के बारे में नकारात्मक तरीके से बात करता है तो यह संदर्भ नहीं है। जब वह कार्यों का उपयोग नकारात्मक तरीके से करता है, तो वह इस दृढ़ विश्वास के साथ व्यवहारपूर्वक बोल रहा होता है कि हम अपने कार्यों के आधार पर ईश्वर के समक्ष स्वयं को धर्मी के रूप में स्थापित कर सकते हैं। यह पाप का सार है, जिसे कानून अपने कानूनी रूप में प्रोत्साहित करता है, और इसलिए, पॉल में आपको पाप और कानून के बीच संबंध मिलता है।

लेकिन पॉल वास्तव में कभी-कभी कार्यों का उपयोग सकारात्मक रूप से करता है, वास्तव में बहुत अधिक पर्यायवाची रूप से, या कम से कम जेम्स यहां कार्यों का उपयोग कैसे करता है उसके अनुरूप। उदाहरण के लिए, 1 थिस्सलुनीकियों 1.3 में, जब हम आपके लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम सदैव हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, क्योंकि हमने यीशु मसीह में आपके विश्वास और आशा के कारण सभी संतों के प्रति आपके प्रेम के बारे में सुना है। जैसा वह यहाँ कहता है, स्वर्ग में तुम्हारे लिए रखा गया है। यहां आप जिस बात पर ध्यान देंगे वह यह है कि हमने यीशु मसीह में आपके विश्वास के बारे में सुना है, स्वर्ग में आपके लिए रखी गई आशा के कारण सभी संतों के प्रति आपके मन में जो प्रेम है।

इस में से जो सत्य का वचन तुम ने पहिले सुना था, वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास पहुंचा, और जिस दिन से तुम ने परमेश्वर के अनुग्रह को सच्चाई से सुना, और समझा, तब से वह तुम्हारे बीच में और सारे जगत में फलता और बढ़ता है। यहाँ, आप पाते हैं कि विश्वास वास्तव में, जैसा कि मैं कहता हूँ, कार्यों में व्यक्त होता है। लेकिन आप इसे पाते हैं, विशेष रूप से इफिसियों 2:10 में जहाँ पॉल कहता है, क्योंकि हम परमेश्वर की बनाई हुई रचना हैं जो मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए बनाई गई हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही तैयार किया है कि हम उनमें चलें।

मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजा गया जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से तैयार किया, कि हम उन पर चलें। गलातियों, आपके पास भी इस प्रकार की चीज़ है, वास्तव में गलातियों 5.6 में जहाँ पॉल कहता है, क्योंकि मसीह यीशु में न तो खतना और न ही खतनारहित कोई काम का है, परन्तु विश्वास प्रेम के माध्यम से काम करता है। विश्वास प्रेम के माध्यम से कार्य कर रहा है।

यहाँ आपको वह प्रेम मिलता है, जिसे, वैसे, वह अध्याय पाँच के श्लोक 14 में कहने के लिए आगे बढ़ेगा, क्योंकि पूरा कानून एक कानून, एक शब्द में पूरा होता है, आप अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करेंगे। यदि आप, दूसरे शब्दों में, 5.13 में वह जो कहने के लिए आगे बढ़ता है, उसके प्रकाश में 5.6 को समझते हैं, तो आप देखेंगे कि विश्वास खुद को आज्ञाकारिता में, प्रेम में व्यक्त करता है, जो वास्तव में भगवान की इच्छा का दिल है जैसा कि मैं व्यक्त किया गया है। कानून। इसलिए, पॉल के कार्य सच्चे विश्वास की एक आवश्यक अभिव्यक्ति हैं।

वास्तव में, रोमियों 6:1-12 में, पॉल एक तर्क में संलग्न है जो कई मायनों में जेम्स द्वारा अध्याय दो में कही गई बात के समान है। वास्तव में, रोमियों 6 में, पॉल ठीक उसी प्रकार की गलतफ़हमी से बचने का प्रयास कर रहा है जिसके विरुद्ध जेम्स अपने पत्र के दूसरे अध्याय में बहस कर रहा है। तो फिर हम क्या कहें, रोमियों 6:1 में पॉल कहता है, क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह प्रचुर मात्रा में हो? किसी भी तरह से नहीं।

हम जो पाप के लिए मर गए अब भी उसमें कैसे जीवित रह सकते हैं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है? इसलिए, मृत्यु का बपतिस्मा लेकर हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मृतकों में से जी उठा, हम भी नये जीवन की राह पर चल सकें। क्योंकि यदि हम उसकी जैसी मृत्यु में उसके साथ एक हुए हैं, तो उसके समान पुनरुत्थान में भी हम निश्चय उसके साथ एक होंगे। हम जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था ताकि पापी शरीर नष्ट हो जाए और हम अब पाप के गुलाम न रहें।

क्योंकि जो मर गया वह पाप से मुक्त हो गया। और वैसे, वह मुक्त शब्द डिकाइओ है। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से धर्मी ठहराया गया।

परन्तु यदि हम मसीह के साथ मर गए हैं, तो हमें विश्वास है कि हम उसके साथ जीवित भी रहेंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि मसीह जो मरे हुओं में से जी उठा है, वह फिर कभी नहीं मरेगा। मृत्यु का अब उस पर प्रभुत्व नहीं रहा।

जिस मौत से वह मरा, वह हमेशा के लिए पाप करने के लिए मर गया। लेकिन वह जो जीवन जीता है, वह भगवान के लिए जीता है। इसलिये तुम भी अपने आप को पाप के लिये मरा हुआ और मसीह यीशु में परमेश्वर के लिये जीवित समझो।

दरअसल, गलातियों 5:13 से 15 में वह अनिवार्य रूप से एक ही बात, एक ही तरह की बात कहता है, जहां वह विश्वास द्वारा औचित्य के लिए इस पत्र के पहले भाग में, निश्चित रूप से, बहुत अधिक तर्क देता है। वह 5:13 में कहता है, क्योंकि हे भाइयो, तुम्हें स्वतंत्रता के लिये बुलाया गया है। वैसे, यहां स्वतंत्रता, यहां पॉल द्वारा स्वतंत्रता का उपयोग और जेम्स की स्वतंत्रता के कानून, स्वतंत्रता के कानून के रूप में कानून की समझ के बीच संबंध पर ध्यान दें।

क्योंकि हे भाइयो, तुम स्वतंत्रता के लिये बुलाए गए हो, अपनी स्वतंत्रता को केवल शरीर के लिये अवसर न बनाओ, परन्तु प्रेम से एक दूसरे के सेवक बनो। क्योंकि सारी व्यवस्था एक ही शब्द में पूरी होती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। परन्तु यदि तुम एक दूसरे को काट कर खा जाओ, तो चौकस रहो, कि तुम एक दूसरे को खा न जाओ।

अब, अपने तर्क के इस बिंदु पर, उसे एहसास होता है कि एक व्यक्ति कह सकता है, ठीक है, आपने इब्राहीम के आधार पर तर्क दिया है, लेकिन पूरे मुक्ति इतिहास में वह केवल एक ही व्यक्ति है जैसा कि हिब्रू धर्मग्रंथों में बताया गया है। शायद वह एक बाहरी व्यक्ति था। उनका अनुभव, शायद, अनोखा, असामान्य था।

तो, जेम्स फिर पद 25 में राहब का परिचय देकर इस संभावित आपत्ति को संबोधित करता है। और ध्यान दें कि आपके पास यहां स्पष्ट तुलना है। और इसी रीति से राहाब वेश्या भी जब दूतोंको ग्रहण करके उन्हें दूसरे मार्ग से भेजती थी, तब क्या वह अपने कर्मोंसे धर्मी न ठहरती थी? इसलिए, किसी को आपत्ति हो सकती है कि अब्राहम का अनुभव अद्वितीय था।

तो, जेम्स उसी तरह से बात समझाने के लिए एक और उदाहरण लाते हैं। लेकिन राहाब शायद ही इब्राहीम से अधिक भिन्न हो सकती थी, एक महिला, एक बुतपरस्त, एक धर्म अपनाने वाली, एक वेश्या जो इब्राहीम से सैकड़ों साल बाद जीवित रही। इस प्रकार, इब्राहीम से इतने भिन्न किसी व्यक्ति का अनुभव, इब्राहीम से इतने भिन्न किसी व्यक्ति की ओर से औचित्य का वही अनुभव, इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि इज़राइल के पूरे इतिहास में, सभी प्रकार के और हर समय के व्यक्तियों को कार्यों द्वारा उचित ठहराया गया था। और केवल विश्वास से नहीं।

राहाब अपने विश्वास के लिए जानी जाती थी। हालाँकि जेम्स इसे केवल मानता है, वह इस ओर स्पष्ट ध्यान आकर्षित नहीं करता है। लेकिन निस्संदेह, वह अपने विश्वास के लिए जानी जाती थी।

वह एक आस्थावान व्यक्ति थी, जैसा कि दर्शाया गया है, और यहोशू 2:9 से 11 में वह जो कहती है, उसके अनुसार यह लगभग निश्चित रूप से जेम्स के मन में था। मैं जानता हूँ कि प्रभु ने तुम्हें भूमि दी है और तुम्हारा भय है हम पर विपत्ति आ पड़ी है, और इस देश के सब निवासी तेरे साम्हने घबरा गए हैं; क्योंकि हम ने सुना है, कि जब तू मिस्र से निकला, तब यहोवा ने तेरे साम्हने

लाल समुद्र का जल सुखा दिया, और तू ने उन दोनों राजाओं से क्या क्या किया यरदन पार के एमोरियोंमें से सीहोन और ओग को तू ने सत्यानाश कर डाला।

और, निस्संदेह, इब्रानियों 11:31 में, इब्रानियों के 11वें अध्याय में प्रसिद्ध फेथ हॉल ऑफ फ़ेम में, राहब का उल्लेख विश्वास के उदाहरण के रूप में किया गया है। किसी पंथ पर सहमति मात्र से उसकी, उसके परिवार की, या जासूसों की जान नहीं बचाई जा सकती थी। किसी पंथ के प्रति सहमति मात्र से उसकी जान नहीं बच सकती थी, अगर उसने जासूसों की रक्षा के लिए काम नहीं किया होता।

उसके कार्य, जो उसके विश्वास से उपजे थे, ने उसे बचाया और विश्वास के समुदाय, जासूसों, इसराइली जासूसों के लिए लाभकारी प्रभाव भी डाला, और निश्चित रूप से, उसने जो किया उससे भूमि की संपूर्ण विजय और उस पर प्राप्ति संभव हो गई। भूमि के अनुबंधित आशीर्वाद का अनुभव करने का इज़राइल का हिस्सा। निस्संदेह, उसने जासूसों के लिए जो किया वह आतिथ्य सत्कार दिखाना था। उन्होंने जरूरतमंदों को आवास, भोजन दिया।

इसके बाद यह जेम्स को उसके सामान्य ठोस निष्कर्ष पर लाता है। वह विशेष व्यक्तियों, इब्राहीम और राहब के बारे में बात कर रहा है। अब, वह आगे बढ़ता है और इससे एक सामान्य निष्कर्ष निकालता है, लेकिन वह ऐसा पुष्टिकरण के अर्थ में करता है।

दूसरे शब्दों में, उनका कहना है कि एक सामान्य सिद्धांत के कारण भगवान ने इन लोगों के संबंध में इसी तरह से कार्य किया, क्योंकि जैसे आत्मा के अलावा शरीर मृत है, वैसे ही कार्यों के बिना विश्वास भी मृत है। अब, आपके पास स्पष्ट रूप से शरीर की मृत्यु और उस प्रकार की मृत्यु के बीच तुलना है जो विश्वास और कार्यों के अलगाव के साथ प्रकट होती है। मुझे लगता है कि यहां जेम्स के मन में दो बातें हैं।

सबसे पहले, वह इंगित करता है कि कर्म और आस्था का पृथक्करण मृत्यु की धार्मिक अवधारणा से संबंधित है। यह सभी प्रकार के क्षेत्रों में और सभी प्रकार से विघटन और विनाश की ओर इशारा करता है और परिणामित होता है। यह मृत्यु से उत्पन्न होता है और मृत्यु की ओर ले जाता है।

इसका जीवित ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वह इसे प्रलोभन और पाप की पूरी अवधारणा के साथ जोड़ता है जिसकी चर्चा उसने अध्याय 1 में की थी। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति, 1:14, प्रत्येक व्यक्ति तब प्रलोभित होता है जब वह अपनी इच्छा से प्रलोभित और प्रलोभित होता है, फिर इच्छा तब होती है जब वह गर्भवती हो जाती है और पाप को जन्म देता है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को जन्म देता है। यह उसी श्रृंखला से संबंधित है जिसका वर्णन उन्होंने 1:15 में किया है।

दूसरी बात जो वह यहाँ कह रहे हैं वह यह है कि आस्था और कर्म का पृथक्करण आस्था और कर्म दोनों को नष्ट कर देता है। न तो किसी चीज़ के लिए अच्छा है और न ही दूसरे के बिना अपना इच्छित उद्देश्य पूरा कर सकता है। कर्मों के बिना विश्वास सड़ती हुई लाश, घृणित, विचित्र, बेकार और अशुद्ध वस्तु के समान है, जबकि विश्वास के बिना कर्म शरीर के बिना अनाकार आत्मा के समान है।

वैसे, हालांकि ग्रीको-रोमन दुनिया में कई यूनानियों के बीच यह एक स्वागत योग्य विचार रहा होगा, यहूदी सोच में यह एक विचित्र धारणा और वास्तव में अकल्पनीय धारणा थी। यहूदी विचारधारा में मनुष्य के पास शरीर नहीं होता। मनुष्य एक शरीर है। आप किसी इंसान के बारे में अनाकार भावना के संदर्भ में नहीं सोच सकते, लेकिन जेम्स इसी पर खेल रहा था।

कार्यों के बिना विश्वास सड़ती हुई लाश की तरह है, घृणित, विचित्र, अशुद्ध, बेकार चीज है, जबकि विश्वास के बिना काम शरीर के बिना एक अनाकार आत्मा की तरह है, एक वाष्प जिसमें कोई शक्ति नहीं है, कोई अर्थ नहीं है, यहूदी सोच में, कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है। तो, यहाँ बताया गया है, हमने पहले ही पक्षपात और इसके पीछे के तर्क के बारे में बात की है। मैं यहाँ थोड़ा पीछे जाकर 2.1 से 13 के संश्लेषण के संबंध में कुछ कहना चाहता हूँ।

2:1 से 4 के पीछे वास्तव में हमारे पास जो समस्या है, वह ईसाइयों की थी, या कम से कम वह यह सुझाव दे रहा है कि ईसाई अपने बीच के गरीबों के मुकाबले अमीरों को प्राथमिकता और सम्मान दिखाने के इच्छुक हो सकते हैं। यह झुकाव कई गहरी समस्याओं की ओर इशारा करता है, विशेष रूप से व्यक्तियों के प्रति एक रवैया जो सामान्य मानव स्वभाव को दर्शाता है जो भगवान और भगवान के मानकों के विपरीत है, अर्थात्, बुरा और सांसारिक। विशेष रूप से, इस रवैये में निम्नलिखित शामिल हैं।

आस्था के संदर्भ में, उस आस्था का व्यावहारिक खंडन जिसे ऐसे ईसाई मानने का दावा करते हैं, आस्था की प्रकृति, आस्था की वस्तु, आस्था के उनके अनुभव का विरोधाभास है। यह आपको हमारी चर्चा से याद है। विवेक के संदर्भ में, इसमें स्थायी और अंतिम चिंताओं, विश्वास, प्रेम और राज्य के कब्जे के साथ क्षणभंगुर, अल्पकालिक बाहरी दिखावे के सापेक्ष मूल्य को भ्रमित करना शामिल है।

परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में, इसमें इस सांसारिक स्थिति और स्थिति को भगवान के राज्य के भीतर की स्थिति और स्थिति से अधिक महत्वपूर्ण देखना शामिल है। कब्जे के संदर्भ में, इसमें एक ऐसा रवैया शामिल है जो संपत्ति हासिल करने की अधिक इच्छा को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो कि अमीर उन्हें दे सकते हैं। यह झूठ अमीरों की चापलूसी करने और गरीबों से दूरी बनाने की प्रेरणा का हिस्सा है।

फिर, वह भी, जिसे वह 4:1-10 में फिर से उठाएगा, ताकि परमेश्वर के राज्य पर कब्जा करने का अंतिम समय का लाभ प्राप्त किया जा सके। शक्ति के संदर्भ में, इसमें एक ऐसा व्यवहार शामिल है जो ईश्वर और ईश्वर के फैसले के डर के बजाय शक्तिशाली व्यक्तियों के भय और धमकी पर आधारित था। वैसे, यह एक ऐसा पहलू है जिसका मैंने पहले उल्लेख नहीं किया था, लेकिन 2:6बी-7 से पता चलता है कि जिस तरह से वे अमीरों के साथ व्यवहार करते हैं उसकी एक प्रेरणा इस बात से संबंधित है कि अमीर उनके साथ क्या कर सकते हैं। .

फिर अनुमान के संदर्भ में भी, इसमें न्यायाधीश की भूमिका निभाना शामिल होगा। एक ऐसी भूमिका जो केवल ईश्वर की है, ईश्वर की भूमिका पर विश्वास करते हुए, अपने लिए उस भूमिका

का अहंकार करते हुए जो केवल ईश्वर की है। धर्मपरायणता के संदर्भ में, यह व्यवहार सच्चे धर्म और सच्ची धर्मपरायणता का विरोध करता है, जिसमें एक गहरी विडंबना शामिल है क्योंकि यह व्यवहार, कम से कम जेम्स इस व्यवहार को सच्चे ईश्वर की पूजा के संदर्भ में प्रस्तुत करता है, वह व्यवहार जो सटीक रूप से पूजा में अभिव्यक्ति के लिए आता है .

वह ऐसा यह इंगित करने के लिए करता है कि ऐसी पूजा सच्चे ईश्वर की पूजा का विरोधाभास है। फिर, अनुमोदन के संदर्भ में, गरीबों के मुकाबले अमीरों को प्राथमिकता देकर, ये ईसाई चुपचाप अमीरों के कार्यों को मंजूरी और पुष्टि कर रहे होंगे और गरीबों के कार्यों को अस्वीकार कर रहे होंगे। ये सभी उन चीजों के पहले विशिष्ट उदाहरण हैं जो कानून की स्वतंत्रता, स्वतंत्रता के कानून के विरुद्ध व्यक्तियों को बांधते हैं और गुलाम बनाते हैं।

उन्हें इन सभी चीजों और उनसे उत्पन्न होने वाले न्याय से मुक्ति और मुक्ति की आवश्यकता है। ये अंश कर्मों के बिना विश्वास के विशिष्ट उदाहरण हैं और इसमें परीक्षणों को सहन न करने के विशिष्ट उदाहरण शामिल हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, यह आंशिक रूप से अमीरों द्वारा इन ईसाइयों के उत्पीड़न की प्रतिक्रिया है, जैसा कि इन अनुच्छेदों द्वारा सुझाया गया है।

ठीक है। मुझे लगता है कि यह शायद रुकने के लिए एक अच्छी जगह है और हम तब आगे बढ़ेंगे जब हम अध्याय 3 और 4 के साथ फिर से शुरू करेंगे।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 23, जेम्स 2:21-26 है।